विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत **3 सितम्बर 2020**

वर्ग सप्तम **राजेश कुमार पाण्डेय**

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

षष्ठः पाठः

अधमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः (परिश्रम से ही कार्य की सिद्धि होती है)

एकस्मिन् ग्रामे रामः श्यामः च नाम्नोः द्वे मित्रे अवसताम्।

एक गांव में राम और श्याम नाम के दो मित्र रहते थे।

द्वयोः मित्रयोः रामः परिश्रमी कर्मठः परं श्यामः अलसः अविवेकी च आसीत्।

दोनों मित्र में राम परिश्रमी कर्मठ लेकिन श्याम आलसी और अविवेकशील था।

श्यामः कदापि किमपि कार्यम् न अकरोत्।

श्याम कभी भी कोई कार्य नहीं करता था।

परं रामः परिश्रमेण निजपरिवारं पालयति स्म।

लेकिन राम परिश्रम से अपना परिवार को पालन पोषण कर रहा था।

एकदा रामः गोधूमस्य शस्यम् उत्पादयितुम् वाञ्छति स्म।

एक बार राम गेहूं के फसल को उत्पादन करना चाहता था।

सः श्यामस्य समीपं गत्वा अवदत् - भो मित्र! कृषिकार्याय एषः उचितः समयः अस्ति।

वह श्याम के समीप जाकर बोला -अरे मित्र! यह उचित समय है।

आगच्छ निजक्षेत्रं कर्षाव। आओ अपना खेती करें।